२६ दिसम्बर, १६५६, प्रातःकाल

प्रवचन

१३

मेरे निज स्वरूप उपस्थित महानुभाव तथा भाई और बहन !

जिसके होने में अविचल आस्था होती है, उसका होना सर्वदा सहज और स्वाभाविक होता है। यदि हम इस बात को स्वीकार करें कि आत्मीयता स्वीकार करने में न लेशमात्र पराधीनता है न असमर्थता ही है, तो बड़ी ही सुगमतापूर्वक आत्मीयता प्राप्त हो सकती है और उसके द्वारा अगाध–अनन्त नित–नव प्रियता जग सकती है। कोई दलील, युक्ति ऐसी हो नहीं सकती, जो हमें आत्मीयता से विमुख कर सके, वंचित रख सके। क्योंकि किसी को अपना मानने में हम पराधीन नहीं हैं। वे हमारे काम आ जाएँ, इसमें हम भले ही पराधीन हों; किन्तु हम उन्हें अपना मानते हैं, क्या इसमें हम पराधीन हैं ? क्या इसमें असमर्थ हैं ? आप देखेंगे कि जीवन में जितनी पराधीनता दिखाई देती है, उसके मूल में अपनी कामना–पूर्ति का प्रलोभन ही होता है। आत्मीयता स्वीकार करने के लिए इस प्रलोभन का कोई स्थान ही नहीं है कि हम आपको इसलिए अपना मानते हैं कि आप हमारे काम आ जायँ। तब तो आप यह कह सकते हैं कि भाई ! अपना मानना हमारे लिए संभव नहीं है। किन्तु हम आपके काम आ जायँ, आप हमारा जो चाहें सो उपयोग करें, आप हमें प्यारे लगें, क्या हम इसमें भी पराधीन हैं ? इसमें पराधीन नहीं है। हाँ, यदि ऐसा कहें कि हम यह चाहते ही नहीं कि कोई हमें प्यारा लगे। तब तो भाई ! आत्मीयता स्वीकार करने का प्रश्न ही नहीं है। किन्तु यदि आप यह चाहते हैं कि कोई हमें प्यारा लगता–हम किसी को प्यारे लगते–यह कोई जरूरी नहीं है; किन्तु हमें कोई प्यारा लगता, तो इसके लिए आत्मीयता ही अचूक उपाय है।

Swami Sharnanandji (Manav Seva Sangh)

कुछ लोग सोचते हैं कि प्रियता किसी महत्त्व के कारण जाग्रत होती है। किसी में जब विशेषता होगी, तब वह हमें प्यारा लगेगा। यह उन लोगों की बात है, जो अपने सुख के लिए किसी को प्यार करते हैं। भोगी का आकर्षण किसी न किसी महत्त्व पर निर्भर है। किन्तु प्रेमी का जो आकर्षण है, प्रेमी का जो खिंचाव है, वह किसी महत्त्व पर नहीं है। वह तो केवल आत्मीयता पर ही है। अपने होने से हम को प्यारे हैं। ब्रह्म होने से प्यारे हों, अनन्त होने से प्यारे हों–ऐसी बात नहीं है। यह जो आत्मीयता है, इस बात के लिए नहीं की जाती कि साहब ! वे परमात्मा है, इसलिए उन्हें अपना मानें; वे सर्व–समर्थ हैं, इसलिए उन्हें अपना मानें। आत्मीयता इस बात पर नहीं है। अजी ! पतित पावन को सब अपना मानने को राजी हैं, दीन–वत्सल को सब अपना मानने को राजी हैं, सर्व–समर्थ को सब अपना मानने को राजी हैं। इसमें विशेषता की क्या बात है ? पर हम तो उन्हें इसलिए अपना मानना चाहते हैं कि वे हमें प्यारे लगें ! भाई, तुम्हें प्यारे लगे, ऐसा क्यों चाहते हो ? तो उनको रस देने के लिए अन्य कोई उपाय है ही नहीं। आप विचार करके देखें; बल के द्वारा अपने से निर्बल पर विजय होती है, योग्यता के द्वारा अपने से अयोग्य पर विजय होती है, सौन्दर्य के द्वारा हम उसको आकर्षित कर सकते हैं, जिसमें हम से कम सौन्दर्य हो। जिसमें अनन्त सौन्दर्य हो, अनन्त ऐश्वर्य हो, अनन्त माधुर्य हो, उसको रस देने के लिए किसी गुण विशेष की अपेक्षा नहीं होती। केवल इस बात की अपेक्षा होती है कि वे हम को प्यारे लगें ! और किसी को प्यारा लगने के लिए इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है कि हम उसे अपना मानें।

इस दृष्टि से अगर आप विचार करके देखेंगे, तो आत्मीयता प्रेमास्पद को रस देने के लिए की जाती है; अपने कल्याण के लिए नहीं की जाती, अपनी सद्गति के लिए नहीं की जाती, अपने को कुछ मिलेगा, इसके लिए नहीं की जाती। क्यों ? अपने लिए जो उपयोगी बात है वह तो प्रभु ने प्रत्येक भाई–बहन को बिना माँगे पहले दे ही दी है। अपने लिए कौन सी उपयोगी बात है ? दो बातें हैं–जो मिला हैं उसके सद्व्यय के द्वारा हम जगत् में उच्च स्थान

www.swamisharnanandji.org

Swami Sharnanandji (Manav Seva Sangh)

पाते हैं और विवेकपूर्ण त्याग को अपनाकर हम स्वाधीनता पाते हैं, निजानंद पाते हैं।

ये दोनों बातें तो हमें ऐसी मालूम होती हैं कि अपने लिए हैं। किन्तु आत्मीयता के द्वारा जो प्रियता जाग्रत होती है, वह प्रियता उनको रस देती है। यद्यपि प्रियता जिसमें जाग्रत होती है, उसमें भी नीरसता नहीं रहती; क्योंकि प्रियता स्वभाव से ही रस रूप है। किन्तु प्रियता का रस प्रेमास्पद को ही मिलता है और वे ही इस रस के अधिकारी हैं। आप अपने निकटवर्ती प्रियजनों से पूछिये कि आप हमको बहुत प्यारे लगते हैं, लेकिन हमारे पास जो वस्तु है, वह हम आपको नहीं दे सकते। तो आपको तुरन्त उत्तर मिलेगा कि आपका प्यार भाड़ में जाय। जिन्हें बड़ा भारी गौरव हो अपनी स्त्री की आत्मीयता पर, वे जरा पत्नी से कहें कि देखिए, हमारे पास कपड़ा नहीं है, खाना देने को नहीं है, मधुरवाणी बोलने को नहीं है, हम तो आपको अपनी मानते हैं, आप प्रसन्न हो जायें। वह कहेगी कि ऐसे निकम्मे पति की हमको जरूरत नहीं है। केवल प्रियता मात्र से रीझने में प्रभु ही समर्थ हैं।

आप विचार करके देख लें। केवल प्रियता–मात्र से रीझने में संसार भर की आप तलाश कर लीजिए, एक भी साथी आपको ऐसा नहीं मिलेगा, जो इस बात से सन्तुष्ट हो जाये कि साहब ! हम आपको प्यार करते हैं, आप इतनी ही बात से सन्तुष्ट हो जायँ। वे कहेंगे कि आप प्यार करते हैं, तो यह आपका बँगला हमारा बँगला है, आपकी मोटर हमारी मोटर है।

हमारे पास बहुत से लोग आते हैं, दूर से देखते हैं कि इनके सम्पर्क में कौन–कौन से आदमी हैं। फिर सोचते हैं, कि स्वामी जी से प्रार्थना करें कि अब तो मानव–सेवा–संघ के प्रेसीडेंट बी.पी. सिन्हा हो गए हैं, हाईकोर्ट की जजी के लिए हमको लिख दें। वे हमारे पास इसलिए आते हैं कि अमुक अफसर स्वामी जी के पास आते–जाते हैं, तो हमारा कन्फरमेशन हो जाय। सोचिए ! एक समय था, जब साधुओं के पास लोग आशीर्वाद के लिए आते थे। आज ऐसा समय आ गया है कि वे साधुओं के पास सिफारिश के लिए

www.swamisharnanandji.org Page 3

Swami Sharnanandji (Manav Seva Sangh)

आते हैं। भैया ! संसार भर की आप खोज कीजिए। एक भी आदमी आपको ऐसा नहीं मिलेगा, जो आपको यह कहे कि हम आपको अपना मानते हैं, इतने मात्र से आप प्रसन्न हो जाइए। एक भी आपको नहीं मिलेगा। और जिसको आप समझते हों कि वह होगा, तो आजमा के देख लीजिए। इसलिए भाई, यह जो आत्मीयता है यह अपनी सद्गति के लिए नहीं है। यह आत्मीयता तो प्रेमास्पद को रस देने के लिए है। आप सोचिए, वे कितने भाग्यशाली होगें, जिनसे प्रेमास्पद को रस मिलता होगा !

यदि यह आपकी माँग है कि जीवन किसी प्रकार उनके लिये उपयोगी हो जाता ! उनका दिया हुआ विवेक अपने लिए उपयोगी हो गया, उनकी दी हुई वस्तु अपने लिए और जगत् के लिए उपयोगी हो गई; किन्तु हम उनके लिए कैसे उपयोगी हो सकेंगे ? तो उसके लिए आत्मीयता अचूक उपाय है। आप इस बात की चिन्ता न करें कि हम साधारण तुच्छ प्राणियों को भला, यह अधिकार कहाँ है कि हम उस अनन्त को अपना कह सकें ! भैया, सोचो तो सही ! जो अनन्त को अपना नहीं कह सकता, वह किसको अपना कह सकता है, यह तो उन्हीं की सामर्थ्य है कि उन्हें हरेक अपना कह सकता है। संसार में तो आप हरेक को अपना नही कह सकते। अनन्त ही में सामर्थ्य है कि वह सभी का है और सदैव सभी का है। इसलिए उसको अपना कहने में हिचको मत, डरो मत, यह विकल्प मत करो, कि हम उन्हें अपना नहीं कह सकते। क्यों नहीं अपना कह सकते ? फिर किसको अपना कहेंगे, बताइए ?

कोई और बता दीजिए, जिसको अपना कहें। आप जिसको अपना कहने चलेंगे, वह न जाने कितनों की ममता का पुञ्ज होगा। आपको एक भी जगह खाली नहीं मिलेगी, जिसका कोई मालिक पहले से न हो। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा, जिसके साथ अनेक लोगों की ममताएँ न चिपकी हों। वे ही तो एक ऐसे हैं, जो सभी के लिए हो सकते हैं। इसलिए इसमें बिल्कुल डरने की बात नहीं है, कि हमने कोई तैयारी नहीं की, हमारे पास कोई सामर्थ्य नहीं है, हममें कोई योग्यता नहीं है, हममें कोई पवित्रता नहीं है, इससे बिल्कुल

www.swamisharnanandji.org

Swami Sharnanandji (Manav Seva Sangh)

डरने की बात नहीं है। हम चाहे जैसे हैं, पर उन्होंने हमें यह स्वाधीनता दी है कि जिसको चाहें अपना कहें, जिसको चाहें अपना न कहें।

आपने जब यह निर्णय कर लिया कि हम प्रभु को अपना मानेंगे, तो प्रभु में यह सामर्थ्य नहीं है कि वे यह कहें कि तुम हमको अपना मत मानो। क्यों ? यह स्वाधीनता मानव–मात्र को मिली है। आप जिसे चाहें अपना कह सकते हैं और ममता के तोड़ने में कोई भी भाई, कोई भी बहन कभी भी पराधीन नहीं है। यह दूसरी बात है कि आप आत्मीयता जोड़ लीजिए, ममता अपने आप टूट जाएगी; आप ममता तोड़ लीजिए, आत्मीयता अपने आप जुड़ जाएगी। अब अगर आप यह कहें कि ममता को तोड़ना तो चाहते हैं, पर तोड़ नहीं पाते। तो कोई बात नहीं; किन्तु इतनी बात तो आप मानते हैं कि आप ममता तोड़ना चाहते हैं और आत्मीयता जोड़ना चाहते हैं ? अगर आपने इतनी बात मान ली है, तो व्यथित हृदय से इतना ही कह दीजिए कि, हे प्यारे ! हम आपको अपना मानना चाहते हैं, पर मान नहीं पाते, हम ममता तोड़ना चाहते हैं, पर तोड़ नहीं पाते ! व्यथित हृदय से इतना कहकर मौन हो जाइए। आपको पता भी नहीं चलेगा कि ममता कैसे टूट गई और आत्मीयता कैसे आ गई। क्यों ? जो करना चाहते हैं आप, नहीं कर पाते, तो जो चाहना है, वही करना है, और कुछ करना नहीं है। देखिए, असमर्थ किसको कहते हैं ? करना चाहे और न कर पाए। और असावधान किसे कहते हैं ? कि जो कर सकें और न करे। तो चाहे असावधानी के कारण और चाहे असमर्थता के कारण हम ममता तोड़ नहीं पाते, आत्मीयता जोड़ नहीं पाते, तो कोई चिन्ता की बात नहीं है; किन्तु ममता को तोड़ना चाहते हैं और आत्मीयता को जोड़ना चाहते हैं, यह जो आपकी चाह है, वह बनी रहे, सुरक्षित रहे, मजबूत हो जाय।

कोई भी चाह सुरक्षित कब रहती है ? जब पूरी न हो और उसके साथ दूसरी कोई चाह न हो। एक ही चाह जब जीवन में रह जाती है, तो वह हमेशा सुरक्षित रहेगी। कब तक ? जब तक पूरी न हो जाय। यदि हम ममता तोड़ना चाहते हैं, आत्मीयता जोड़ना

www.swamisharnanandji.org

Swami Sharnanandji (Manav Seva Sangh)

चाहते हैं, तो उस चाह को सुरक्षित रहने दें। नहीं तोड़ सके, कोई चिन्ता की बात नहीं; नहीं जोड़ सके, कोई चिन्ता की बात नहीं। परन्तु यह तोड़ने–जोड़ने की जो लालसा है, जो अभिरुचि है, वह बनी रहे। उसके बनाए रखने के लिए एक ही उपाय है कि कोई और कामना न हो। क्यों ? जिस भूमि में बहुत से बीज बोए जाते हैं, वह भूमि उन पौधों को मजबूत नहीं उगाती। कहीं एक ऐसी भूमि है, जिसमें एक ही बीज हो, तो कितना मजबूत उगेगा वह पौधा ! यह हमारा और आपका जो व्यक्तित्व है, वह भी एक भूमि है।

अगर हमारे आपके व्यक्तित्व में केवल एक ही लालसा है कि ममता टूट जाती और आत्मीयता जुड़ जाती, तो सच मानिए, जिस समय एक ही लालसा जीवन में रह जाती है, तो वह अपने आप पूरी हो जाती है। और जब वह लालसा पूरी होती है, तब सचमुच यह नहीं पता चलता कि ममता हमने तोड़ी थी कि आत्मीयता हमने जोड़ी थी। यह जो ममता के तोड़ने का पता चलता है, यह जो आत्मीयता के जोड़ने का पता चलता है, यह अहंकृति ही है। वे तो परम भाग्यशाली हैं कि जिन्हें ऐसा भास होता है कि भाई, मैंने ममता तोड़ी नहीं, फिर न जाने कैसे टूट गई ! मैंने तो आत्मीयता जोड़ी नहीं, फिर न जाने कैसे जुड़ गई। दोषों की निवृत्ति का भास न हो और गुणों की अभिव्यक्ति का भास न हो, तब समझना चाहिए कि निर्दोषता से एकता हो गई। जब तक साधक को यह मालूम होता है कि हमने इस बुराई को छोड़ दिया और उस भलाई को अपना लिया, तब तक तो सच बात ऐसी है कि न वह भलाई है न बुराई का त्याग है।

इसलिए जीवन में जो असमर्थता का अनुभव है, यह बड़ी भारी विकास की भूमि है; असमर्थता का चिन्तन नहीं, असमर्थता का अनुभव करना है। असमर्थता के अनुभव में तो एक पीड़ा है और असमर्थता के चिन्तन में पीड़ा नहीं होती, असमर्थता के बनाए रखने में पीड़ा नहीं होती। हम असमर्थ हैं, यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन जो कहते हैं कि उस असमर्थता का हमको अनुभव है या हम असमर्थता बनाए रखते हैं, वे असमर्थता–जनित सुख का भोग करते

www.swamisharnanandji.org

Swami Sharnanandji (Manav Seva Sangh)

हैं। जिन्हें अपनी असमर्थता का अनुभव होता है, वे व्यथित हो जाते हैं। न जाने, 'उस निठुर' का यह स्वभाव क्यो है ? लगातार चौबीस घण्टे भी वे किसी को व्यथित नहीं देख सकते।

अगर मैं अपने विश्वास की बात कहूँ, तो मेरा विश्वास यह है कि केवल व्यथा अल्प से अल्प काल भी नहीं रहती, केवल व्यथा। यह जो हमें और आपको जीवन में दुःख दिखाई देता है, व्यथा दिखाई देती है, उस व्यथा के साथ–साथ किसी न किसी प्रकार के सुख का भोग रहता है। जब जीवन में सुख का लेश भी नहीं रहता और केवल व्यथा रह जाती है, तब मेरा तो ऐसा ख्याल है कि जैसे सूर्य के उदय और अंधकार की निवृत्ति में काल की कल्पना नहीं हो सकती, उसी प्रकार केवल व्यथा का होना और विकास का होना बिल्कुल एक साथ है।

अब आप सोचिए, क्या हम आत्मीयता नहीं कर सके, इसकी व्यथा के भी अधिकारी नहीं हैं ? ममता नहीं तोड़ सके, तो क्या इस व्यथा के भी अधिकारी नहीं हैं ? अगर इस व्यथा के भी आप अधिकारी नही है, तो आपका अस्तित्व ही कहाँ सिद्ध होगा ? आप विचार कीजिए। अगर हम और आप अपना कोई अस्तित्व स्वीकार करते हैं, तो उसमें कुछ न कुछ होना चाहिए। जो चाहते हैं, उसके न होने की व्यथा हमें उससे अभिन्न कर देती है, जो हमारी माँग है। इससे यह सिद्ध हुआ कि वर्तमान की वेदना में ही समस्त विकास है। इस दृष्टि से यदि हम स्वाधीनतापूर्वक आत्मीयता नहीं जोड़ सकते, तो आत्मीयता न होने की जो व्यथा है,उसे होने दें। वे परम सुन्दर सर्व–समर्थ होने के कारण सभी को अपनाते हैं और किसी को भी व्यथित नहीं देख सकते।

लोग कहेंगे कि सैंकड़ों आदमी दुःखी हैं। वे हमको दुःखी क्यों देखते हैं ? तो आपके दुःख में सुख का भोग और सुख का प्रलोभन है। उस प्रलोभन का नाश करने के लिए जीवन में दुःख है। जिस समय सुख का प्रलोभन नहीं होगा, सुख का भोग नहीं होगा, उसी समय वह दुःख जिसे आप दुःख मानते हैं या अनुभव करते हैं, नहीं रहेगा, अपितु वहाँ दुःखहारी होंगे। वे कहेंगे– तुम मेरे हो। तुम

www.swamisharnanandji.org

Swami Sharnanandji (Manav Seva Sangh)

कहोगे–नहीं, तुम मेरे हो। वे कहेंगे–तुम प्यारे हो। तुम कहोगे–नहीं, तुम प्यारे हो। यही अगाध अनन्त रस है और इसी में जीवन की पूर्णता है।

।। हरिॐ ।।

२६ दिसम्बर, १६५६, सायंकाल

प्रवचन १४

मेरे निज स्वरूप उपस्थित महानुभाव तथा भाई और बहन !

मानव–सेवा–संघ का उद्देश्य अपना कल्याण और सुन्दर समाज का निर्माण है। मानव–सेवा–संघ की नीति में मानव का अर्थ केवल दो बातों में है– जिसकी कोई माँग है और जिस पर कोई दायित्व है। माँग उसे नहीं कहते, जो पूरी नहीं हो सकती और दायित्व उसे नहीं कह सकते, जिसे पूरा नहीं कर सकते। इस दृष्टि से इस मानव जीवन में असफलता के लिए, निराशा के लिए, हार मान कर बैठ जाने के लिए लेशमात्र भी स्थान नहीं है। अब विचार यह करना है कि हम सबकी माँग क्या है ? इस पर विचार करने से यह स्पष्ट विदित होता है कि ऐसा कोई भाई नहीं, ऐसी कोई बहन नहीं जिसकी माँग विश्राम न हो, स्वाधीनता न हो और प्रेम न हो। हम सबको तीन बातें चाहिए–विश्राम चाहिए, स्वाधीनता चाहिए, और प्रेम चाहिए। किन्तु उनकी प्राप्ति के लिए हम पर दायित्व क्या है ? दायित्व एक है, तीन नही,। यह क्या है कि प्रत्येक भाई और बहन अपने जीवन में अपने जाने हुए–सुने हुए नहीं, माने हुए नहीं–अपने

www.swamisharnanandji.org